## फणीश्वरनाथ रेणु (04 मार्च, 1921 - 14 अप्रैल, 1977)

आजादी के बाद के कथा साहित्य में फणीश्वरनाथ रेणु जी भाव, शैली और "ठेठ देशीयता" का विशिष्ट रंग ढंग लिए अलग धरातल पर खड़े दिखाई देते हैं। रेणु के उपन्यासों में ग्रामीण जन-जीवन की वास्तविक हलचलों, परिवर्तित स्थितियों, टकरावों, तनावों और जटिलताओं तथा विडम्बनाओं का जिस प्रकार उजागर हुआ उससे वे हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के असली वारिस कहे जाने लगे। उन्होंने जिस स्थिति को जिया, भोगा उस पर प्रतिक्रिया की। उन्होंने लिखने की प्रक्रिया में कभी अपने को खोजा तो कभी अपने को खोजने की प्रक्रिया में लिखा। एक कलाकार की हैसियत से उनकी प्रतिबद्धता आम आदमी के प्रति रही। रिपोतार्ज लेखक के रूप में भी रेणु ने उल्लेखनीय साहित्य रचा। रेणु की कहानियों ने ग्रामीण आंचलिक परिवेश के साथ-साथ शहरी जीवन की विभिन्न स्थितियों को भी अपने वस्तु विन्यास में समेटा। हिंदी सिनेमा के रूपहले पर्दे पर आयी रेणु की "तीसरी कसम" कहानी ने उनकी लोकप्रियता को भरपूर उठान दी। **उनकी प्रमुख रचनाएं हैं:** - मैला आंचल, ठुमरी, आदिम रात की महक, अगिन खोर, अच्छे आदमी तथा पलटू बाबू रोड ।